नारायण संवा संस्थान द्वारा आयोजित नारायण कृत्रिम अंग माप शिविर में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के संबोधन का प्रारूप

दिनांक : 12 मई 2024, रविवार	**समय : 9:00 AM**	**स्थान : आशी अप्सरा, पल्टन बाजार**

- नारायण सेवा संस्थान की निदेशक

  श्रीमती वंदना अग्रवाल जी,
- श्री दिगम्बर पंचायत भवन ट्रस्ट के अध्यक्ष

  श्री महावीर प्रसाद जैन जी,
- श्री गौहाटी गौशाला के अध्यक्ष श्री कैलाश लोहिया जी,
- ब्राह्मण सभा, गुवाहाटी के अध्यक्ष श्री रतन शर्मा जी,
- पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री

  श्री विनोद कुमार लोहिया जी,
- बिहार फाउंडेशन के अध्यक्ष एवं पूर्व डीजीपी

  श्री उमेश कुमार जी,
- श्री श्वेताम्बर जैन तेरापंथ सभा के अध्यक्ष

  श्री बजरंग लाल सुराणा जी,
- माणिकचन्द ज्वैलर्स के चेयरमैन

  श्री राम गोपाल सोनी जी,
- पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष

  श्री पंकज जालान जी,

- मातृ मंदिर की सह-संस्थापक सदस्या
  श्रीमती मीरा सराफ जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण
- नारायण सेवा संस्थान एवं अन्य सहयोग संगठनों के प्रतिनिधिगण
- मेरे प्यारे दिव्यांगजों
- देवियों और सज्जनों,

आप सभी को मेरा नमस्कार!

1. "नारायण सेवा संस्थान" के इस कृत्रिम अंग माप शिविर में आप सभी के बीच उपस्थित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। वास्तव में यह मेरे लिए गर्व की बात है कि इस कार्यक्रम के माध्यम से मुझे दिव्यांगों के जीवन में खुशियों के रंग भरने के आपके प्रयास की सराहना करने का अवसर प्राप्त हुआ है। मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं नारायण सेवा संस्थान को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

2. मुझे बताया गया है कि पूर्वोत्तर भारत में मारवाड़ी समाज की अग्रणी सामाजिक संस्था **"पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन"** और **"पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी युवा मंच"** के साथ-साथ 30 अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से यह विशाल **"नारायण कृत्रिम अंग माप शिविर"** का आयोजन किया गया है।

इनमें से कुछ संस्थाओं के नेतृत्वकर्ता एवं प्रतिनिधिगण मंच पर उपस्थित हैं। इस शिविर के आयोजन में सहयोग के लिए आप सभी को मेरा धन्यवाद। मैं दिव्यांगों के इस सेवा कार्य में सहयोग देने वाले अन्य सभी संगठनों को धन्यवाद देता हूं।

3. देवियो और सज्जनो,

नारायण सेवा संस्थान निःस्वार्थ सेवा का एक पवित्र संस्थान है। "नर सेवा नारायण सेवा" के मूल मंत्र के साथ यह संस्थान गरीब एवं जरूरतमंदों और दिव्यांग लोगों के कल्याण के लिए काम कर रहा है।

23 अक्टूबर 1985 को स्थापित यह संस्थान पिछले लगभग 39 वर्षों से निःस्वार्थ और समर्पित भाव से मानवता की सेवा में जुटा है। इस संस्थान का एक ही सिद्धांत है, वह है अधिक से अधिक दिव्यांग लोगों के चेहरे पर खुशी लाना और उनके जीवन को बेहतर और आसान बनाना।

4. संस्थान गरीब और असहाय दिव्यांगों के पुनर्वास की व्यवस्था करता है। दिव्यांग जोड़ों के लिए सामूहिक विवाह का आयोजन करता है। संस्थान जरूरतमंद और दिव्यांग बच्चों को निःशुल्क शिक्षा भी प्रदान करता है। संस्थान दिव्यांगों को सशक्त बनाने के लिए कौशल युक्त प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

5. मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि नारायण सेवा संस्थान ने अब तक 4,45,500 से अधिक दिव्यांगों की सफल शल्य चिकित्सा और 39200 से अधिक कृत्रिम अंग लगाकर उनकी जिंदगी को रोशन कर चुका है। वास्तव में यह संस्था दिव्यांगों के लिए नारायण है। संस्थान का यह सेवा कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है।

6. इस अवसर पर मैं संस्थान के संस्थापक श्री कैलाश अग्रवाल जी "मानव" को हार्दिक धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने इस दिव्यांगों की निःस्वार्थ सेवा के लिए इस संस्थान की नींव रखी। उन्हें समाज सेवा मं बहुमूल्य योगदान के लिए भारत सरकार ने पद्‌मश्री से अलंकृत किया है। यह हम सबके लिए गौरव की बात है।

मैं संस्थान के अध्यक्ष श्री प्रशांत अग्रवाल जी और संस्थान के अन्य पदाधिकारियों को भी धन्यवाद एव बधाई देता हूं, जिनके प्रयास से यह सेवा संस्थान दिव्यांगों के लिए वरदान बन गया है। मानवता के पुजारियों का यह संस्थान न सिर्फ दिव्यांगता के खिलाफ खड़ा है, बल्कि अभावों में गुजर-बसर कर रहे दिव्यांग लोगों का मददगार भी बना है।

7. मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि मेरे गृहनगर उदयपुर से कोसों दूर मां कामाख्या की नगरी गुवाहाटी में आकर नारायण सेवा संस्थान ने यहां के दिव्यागों के जीवन में खुशियां बिखेरने के लिए यह कृत्रिम अंग माप शिविर का आयोजन किया है।

मैं यहां मौजूद सभी दिव्यांगजों से कहना चाहता हूं कि यह संस्थान आपकी जिंदगी से “दिव्यांगता की बैसाखी” को छीनने और आपको अपने कदमों पर चलाने और आत्मनिर्भर बनाने के लिए आई है। इसलिए मेरा आप सभी से आग्रह है कि आप अधिक से अधिक संख्या में इस शिविर का लाभ उठाएं और अपनी जिंदगी को नई दिशा प्रदान करें।

8. मुझे बताया गया है कि संस्थान ने गुवाहाटी के 5000 से अधिक दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाने का संकल्प लिया है। मैं संस्थान को इस संकल्प को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

9. देवियो और सज्जनो,

सेवा जीवन का मंत्र है। यह जड़-चेतन में व्याप्त ईश्वर की उपासना का माध्यम है। यह किसी के उपकार के लिए नहीं होती। सेवा त्याग की अभिव्यक्ति होती है। सेवा स्वयं और दूसरों को “नर से नारायण” बनाने का उपाय है।

सेवा कार्य में किसी भी प्रकार के छुआ-छुत एवं मनभेद का कोई विचार अपने मन में नहीं रखना चाहिए। केवल आनंद की अनुभूति पाने के लिए निःस्वार्थ भावना के साथ सेवा कार्य करना चाहिए।

10. विवेकानंद ने कहा था कि जो दूसरों के लिये जी रहे हैं, वही वास्तव में जी रहे हैं। जो सिर्फ अपने लिये जी रहे हैं, वे मृतप्राय: हैं। इसलिए जन-जन में सेवा का भाव होना चाहिए।

मैं समझता हूं कि जनकल्याण और सामाजिक कार्यों में जुटे संगठनों तथा समाजसेवियों को जनमानस की सेवा के साथ-साथ समर्थवान लोगों को समाजसेवा के लिए प्रेरित करना चाहिए। इस क्रम में सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं से सेवानिवृत्त विशिष्ट व्यक्तियों को निःस्वार्थ सेवा के क्षेत्र से जोड़ना चाहिए।

11. सेवा हमेशा प्रार्थना से ऊँची होती हैं, क्योंकि वह स्वार्थ से परे परोपकार से जुड़ी होती हैं। सेवा के पथ पर चलने वाले हर व्यक्ति को मैं शुभकामनाएं देते हुए एक आदर्श समाज बनाने की अपील करता हूँ।

12. ईश्वर कृपा से हम सब को मनुष्य जीवन मिला है। हमें इसका महत्व समझते हुए इसका सदुपयोग करना चाहिए। राम चरित्र मानस में तुलसीदास जी ने लिखा हैं-

बड़े भाग मानुष तन पावा।

सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।

इसलिए हमें मानव जीवन का मर्म समझते हुए इसे सार्थक बनाने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए। यह मनुष्य जन्म देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। हमें भोग-विलास की जिन्दगी छोड़कर मानव सेवा में समर्पित जिन्दगी जीनी चाहिए। इससे जीवन का उद्देश्य पूर्ण होगा। हमारे सत्कर्म से समाज भी सुखी होगा। मानव सेवा से बढ़कर इस दुनिया में कुछ भी नहीं हैं।

13. आज हर व्यक्ति का नैतिक पतन हो रहा हैं। इसीलिए जरूरी है कि हम अपनी नैतिकता बनाएं रखें। हमें कमजोर, गरीब और दिव्यांगों की सहायता करनी चाहिए। हमें जाति-धर्म-पंथ को भूलकर सर्वधर्म-सम्भाव की दिशा में आगे बढ़ना है। यही हमारी संस्कृति रही है।

14. समाज के सभी लोगों की दुर्बलता दूर किये बिना समर्थ भारत का निर्माण नहीं किया जा सकता। देश के चहुमुखी विकास के लिए हर समाज, हर वर्ग के पिछड़े लोगों की आर्थिक दुर्बलता और कमियों को दूर करना होगा। इसके लिए हम सभी को मिलकर सकारात्मक सोच के साथ कार्य करना होगा। हम सभी को **“सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः”** के सिद्धांत का पालन करना होगा।

15. मुझे पूर्ण विश्वास है कि नारायण सेवा संस्थान और इस शिविर में सहयोग कर रहे सभी सामाजिक संगठन भविष्य में भी इसी सिद्धांत और संकल्प के साथ सेवा कार्य में जुटा रहेंगे।

मैं एक बार फिर संस्थान को इस शिविर की सफलता और उनके भविष्य के कार्यों के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।